ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

रामवृक्ष बेनीपुरी की संस्मरणात्मक यात्रा

Memoirs of Ramvriksha Benipuri

Paper Submission: 16/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

अनिल कुमार गिरि
सहायक प्राध्यापक,
हिदी विभाग,
श्री डी0 पी0 वर्मा मेमोरियल डिग्री कालेज, सीतापुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

रामवृक्ष बेनीपुरी का संस्मरण साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। बेनीपुरी जी कवि, निबन्धकार, आलोचक के साथ–साथ एक कुशल संस्मरणकार भी है। संस्मरण विधा में इन्होनें क्रान्तिकारी भावों का समावेश कर संस्मर्ण्य व्यक्ति को उच्चतम भाव पर स्थापित किया है।

The memoir of Ramvriksha Benipuri occupies an important place in the field of literature. Benipuri is a poet, essayist, critic as well as a skilled memoirist. In the memoir mode, by incorporating revolutionary sentiments, he has installed the person of the memory at the highest rate.

मुख्य शब्दः रामवृक्ष बेनीपुरी, साहित्यकार, आराधना, संस्मर्ण्य, भावात्मक समायोजन, प्रभावोत्पादक, मार्मिक, सराहनीय प्रफुल्लित, व्यंग्यात्मकता।

Ramavriksha Benipuri, Litterateur, Worship, Memory, Emotional Adjustment, Affective, Poignant, Appreciative Cheerfulness, Sarcasm.

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में समय–समय पर ऐसे महान एवं कालजयी साहित्यकार एवं रचनाकार जन्म लेते रहे हैं। जिन्होने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज और मानवता के हित का प्रसार किया है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी और लेखन प्रतिभा के धनी साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन् 1902 ई0 में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के 'बेनीपुर' नामक गॉव में हुआ था । सामान्य किसान परिवार में जन्में रामवृक्षबेनीपुरी के हृदय में देश प्रेम की भावना प्रबल थी । बेनीपुरी जी स्वतंत्रता के दीवाने थे। पत्र पत्रिकाओं में लिखकर और स्वंय उनका सम्पादन करके देशवासियों में देशभक्ति की भावना भरने का प्रयास किया करते थे। जिस कारण उन्हें अनेक बार जेल यात्रा करनी पड़ी पर उनकी स्वतंत्रता और सरस्वती की आराधना अनवरत चलती रही आजीवन साहित्य–साधना में लीन रहने वाला यह महान साहित्यकार सन् 1968 ई0 में इस निस्सार संसार से विदा हो गया । भारतीय स्वतंत्रता आन्दोंलन को आगे बढ़ाने वाले क्रान्तिकारी लेखक तथा संस्मरण साहित्य को पल्लवित एवं विकसित करने वालों में रामवृक्षबेनीपुरी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। आपकी सफल संस्मरणात्मक कृतियॉ 'लाल तारा' 1938 ई0 'माटी की मूरतें' 1946 ई0 'गेहूँ और गुलाब' 1950 ई0 'मील के पत्थर' 'जंजीरें और दीवारें' आदि के कारण आप एक संस्मरणकार माने जाते हैं। 'पैरों में पंख बाँधकर' यात्रा संम्बन्धी संस्मरणात्मक कृति है। संस्मरण 'माटी की मूरतें' का अनुवाद साहित्य अकादमी के द्वारा देश की लगभग समस्त भाषाओं में कराया जा चुका है। इसमें कथात्मक सौदर्य से परिपूर्ण भावात्मक संस्मरण है। वही लाल तारा नामक संस्मरणात्मक कृति मे स्वतंत्रता की भावना को पल्लवित करने वाले स्मृति चित्रों का समायोजन प्रभावी ढंग से किया गया है। इसमें संस्मरणाकार ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का प्रयास किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन रामवृक्षबेनीपुरी जी के संस्मरण साहित्य पर संक्षिप्त प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। संस्मरण साहित्य के क्षेत्र में बेनीपुरी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वे एक कवि होने के साथ–साथ निबन्धकार आलोचक और एक कुशल संस्मरणकार भी है। इन्होनें अपने संस्मरणों में मधुर–कटु स्मृतियों का उल्लेख कर उन्हें प्रभाव पूर्ण बना दिया है। इन्हीं स्मृतियों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

बेनीपुरी की संस्मरण यात्रा

'माटी की मूरतें' संस्मरणात्मक कृति में रजिया, सरजू भैया, बलदेव, नगर, रूपा की आजी, बालगोविन्द, भौजी, धरमसार, सुभान खॉ, और बुधिया जैसे 12 व्यक्तियों के स्मृति चित्र अंकित हैं। जिन्हें संस्मरणकार ने निकट से जान परखा है। इन सभी संस्मर्ण्य व्यक्तियों की प्रकृति उनके व्यक्तित्व और स्वभाव की सूक्ष्म अभिव्यक्ति की है। जिसमें छोटी–से छोटी बात का वर्णन मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक ढंग से किया है। इस संस्मरण के सभी संस्मर्ण्य पात्र स्वयं अपने बारे में बोलते प्रतीत होते हैं। जीवन के मूलभूत तत्वों को निकट से स्पर्श करने वाली ये मूरतें अपनी सहज मानवीय गरिमा से परिपूर्ण होने के कारण प्रत्येक के जीवन के लिए उपयोगी एवं सराहनीय बन पडी है। बेनीपुरी जी के संस्मरणों का वर्णन विषय उनकी अनुभूतियों का मार्मिक एवं स्वाभाविक चित्रण है। जो पाठक के मन में कही कौतूहल उत्पन्न करता है। तो कही उन्हें भाव विभोर करता है, कही हर्ष तो कही विषाद की भावभूमि पर उन्हें ले आता है। महादेवी वर्मा के समान ही रामवृक्षबेनीपुरी ने भी अपने संस्मरणों में उपेक्षित पात्रों को साहित्यिक आदर्शो के अनुरूप ढालकर उन पात्रों को अमर कर दिया बेनीपुरी के संस्मरणों के भाषा की गम्भीरता सर्वत्र दिखायी देती है। बुधिया की करूण मार्मिक कथा कहते –कहते आप थकते नहीं है।

''जैसे वे दिन उसकी युवावस्था के थे शायद अब नहीं, उसका रूप निरंतर क्षीण होता जा रहा है। बाढ़ खत्म हो गयी अब नदी अपनी धारा में शान्त सी बहती है। न बाढ है न हाहाकार! कीचड़ और खरपात का नामो निशान नहीं है, शान्त स्निग्ध गंगा।''[1]

लाल तारा यह बेनीपुरी जी का यह प्रथम संस्मरण है। जिसमें 16 संस्मरण संग्रहीत हैं। जिनमें प्रमुख संस्मरण इस प्रकार हैं– लाल तारा, यह और वह, कुदाल, शहीदों की चिताओं पर, ऑधी में चलों, नई संस्कृति की ओर कुछ क्रान्तिकारी विचार, रेलगाडी, जवानी, कलाकार और दीपदान। इस संग्रह के संस्मरणों में उन्होने सम्बन्धित पात्रों के व्यक्तित्व को विभिन्न दृष्टि– कोणों से देखा और उन्हें शब्दबद्ध किया। इन संस्मरणों में संस्मरणकार ने भारतीय किसान जीवन की गाथा को अपने स्मृति संदर्भो के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

लेखक ने अपनी विचारधारा के अनुरूप ही पात्रों का चुनाव किया है। 'लाल तारा शीर्षक संस्मरण में संस्मरणाकार ने 'गरयू' नामक किसान का जीवन चित्र प्रस्तुत किया है जो एक सामान्य किसान के जीवन में दृष्टिगत होने वाली आर्थिक तंगी के प्रभाव से वह अछूता नहीं है, अपने कठिन परिश्रम से उपजाए हुए अन्न को उधार और कर्ज के रूप में ही देने के प्रति उसके मन में उठने वाला करूण आवेश द्रष्टव्य है।

''सालभर दिन–रात एक की, माघ का जाडा घुटनों में सिर छुपाकर काटा। जेठ की दुपहरिया कुदाल की छाया में गंवायी। भादों की रिमझिम कीचड़ में खड़ा–खड़ा हँस–हँस गुजार दी, किन्तु जब फल खाने का वक्त हुआ! हाँ ये गिद्ध हाँ ये गिद्ध नही तो क्या है। ये गिद्ध हैं माँसखोर हैं। गिद्ध तो मुर्दा माँस खाता है, ये गिद्ध के भी चचा हैं। जिन्दा माँस खाते है।''[2]

प्रकृति की पृष्ठभूमि में मानवीय जीवन का मार्मिक चित्रण करना बेनीपुरी के संस्मरणों की विषेशता है। लाल तारा संस्मरण में इस प्राकृतिक सौंदर्य का चित्र मन को प्रफुल्लित कर देता है।

''निविड़ अन्धकार और घने कुहासे के पर्दे फाड़ कर वह लाल तारा पूरब क्षितिज पर जगमग–जगमग कर रहा था । गरयू उठा पूस का जाड़ा पुआल की तहों को क्षेद इस आखिरी रात को गरयू के कलेजे तक पहुॅच चुका था। पहले दया फिर गरयू। गरयू उठा झोपडी के बाहर आया एक बार काँपते– काँपते उसने खलिहान के चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखने की चेष्ठा की।'' [3]

'जंजीरे और दीवारें' संस्मरणात्मक कृति में बेनीपुरी जी के जेल जीवन से सम्बन्धित संस्मरण हैं। जिसमें संस्मरणाकार नें जेल जीवन के कटु स्मृति चित्रों का अंकन किया है। कलम के सिद्धहस्त संस्मरणकार बेनीपुरी जी के संस्मरण कभी आत्मकथात्मक तो कभी निबन्धात्मक, रेखाचित्र का सम्मिलित रूप प्रतीत होते हैं। स्वयं संस्मरणकार के अनुसार ये निबन्ध के परम्परागत स्वरूप से प्रथक हैं। ये रेखाचित्र भी नही हैं। शायद इन्हें विचार चित्र कहा जा सकता है। बेनीपुरी ने अपने संस्मरणों में स्वतंत्र विचारों के माध्यम से देश की परिस्थितियों का अंकन स्वाध्यय चिंतन से किया, जिससे ये संस्मरण रोचक सजीव और स्वाभाविकता से परिपूर्ण हो गये हैं। जातिवाद, स्वार्थ, फैशन, झूठा स्वाभिमान, विषमता, तथा ऊँच नीच की प्रवृत्ति से दुःखी होकर 'रजिया और बलदेव' जैसे संस्मरणात्मक चित्र संस्मरणकार की मनोवृत्ति के अनुरूप है।

''मेरी रानी को सुहाग की चूड़ियाँ पहनाने उस दिन यही रजिया आयी और मेरे ऑगन में कितनी धूम मचायी। इस नटखट ने यह लूॅगी मुँह माँगी चीज न मिली तो वह लूँगी कि दुलहिन टापती रह जायेगी।''[4]

इसी प्रकार के मनोविनोद से परिपूर्ण संस्मरणात्मक चित्र रामवृक्षबेनीपुरी के संस्मरणों की विशेषता है। कहीं–कहीं इनके संस्मर्ण्य में व्यंग्यात्मकता के भाव की झलक दृष्टिगत भी होती है।

''बैठिये बैठिये उत्तेजित मत होइये– नायब जेलर बोलने लगा। मैने कहा यह हँसी खेल नहीं है। आपने हमें भला मानस समझ रखा है, जिन पर जो कुछ भी किया जा सकता है, आज आपको बता दूँ । हम कहाँ तक क्या कर सकते है। नाराज काहे को होता है। बेनीपुरी आपका फोटो नहीं आया।'' [5]

रामवृक्षबेनीपुरी के संस्मरणों में यथार्थ एवं कल्पना का समन्वय देखने को मिलता है। संस्मरणकार ने कल्पना को सत्य से अलग नहीं होने दिया है। संस्मर्ण्य व्यक्ति के व्यक्तित्व की विविध भाव–भंगिमाओं को सजीवता और सजगता के साथ प्रस्तुत किया है। जिसमें इन्हें पूर्ण सफलता मिली है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि बेनीपुरी जी के संस्मरण विरल अनुभूतियों एवं स्मृतियों के संग्रह है। जो उन्हें एक सफल संस्मरणकार की श्रेणी में प्रतिष्ठित करते हैं। बेनीपुरी जी के संस्मरण स्मृति चित्र मात्र नहीं हैं।

वरन संस्मर्ण्य व्यक्तियों के अंतरंग एवं बहिरंग व्यक्तित्व का स्वभाव का उनके जीवन में घटित महत्वपूर्ण घटनाओं का ग्यानमय स्त्रोत हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *माटी की मूरतें पृष्ट संख्या 52 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली 1998*
2. *बेनीपुरी ग्रन्थावली पृष्ट सं0 91 सम्पादक–सुरेश शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 1998*
3. *बेनीपुरी ग्रन्थावली पृ0सं0 89 सम्पादक–सुरेश शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली 1998*
4. *माटी की मूरतें पृ0सं0 74 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली 1998*
5. *5– जंजीरे और दीवारें पृ0स02, किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद 2004*
6. *6– हिन्दी निबन्ध एवं अन्य गद्य विधाऐं, डॉ योगेन्द्र प्रताप सिंह, साहित्य रत्नालय प्रकाशन कानपुर 2008*
7. *7– हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास, उमेश शास्त्री, देव नागर प्रकाशन जयपुर 1987*